ISSN 2456-4818

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनवरी-मार्च 2022

वर्ष: 54 अंक: 1

हिन्दी विज्ञान साहित्य परिषद
संस्थापित-1968

₹50

वैज्ञानिक

वैज्ञानिक

हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद की पत्रिका

अमृत महोत्सव विशेषांक

75 वर्षों में विज्ञान की उपलब्धियाँ

जन्म शताब्दी विशेष

डॉ. सी.एम. सिंहः जीवन तथा भारत में पशु चिकित्सा विज्ञान प्रगति में उनका योगदान

डॉ. रमेश सोमवंशी

पूर्व इमेरिटस प्रोफेसर, भाकृअप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली

मानद-सचिव, डॉ. सी.एम. सिंह इंडोवमेंट ट्रस्ट, ए-336, राजेंद्र नगर, बरेली, (उप्र)

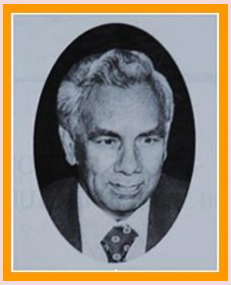

डा. सी.एम. सिंह (1922-2005)

भारत एक कृषि प्रधान देश है. यहां कृषि एवं पशु-पालन सदियों से पारम्परिक विधि से किया जाता रहा है. स्वतंत्रता पूर्व भारत में खेती की दशा बहुत अच्छी नहीं थी. यह पूर्णतया वर्षा पर निर्भर करती थी तथा इसके अभाव में यहां सूखा व अकाल पड़ता था. देश की बढ़ती आबादी के कारण गंभीर अन्न संकट भी उत्पन्न होता रहता था. पशुओं की अधिकांश नस्लें कम उत्पादक थीं तथा इनमें कई तरह के संक्रामक रोगों का प्रकोप होता था. रिंडरपेस्ट महामारी से गौवंशीय पशुओं का विनाश हो रहा था. देशी मुर्गियों में अंडा उत्पादन करने की क्षमता कम थी. अंग्रेजों ने देश में पशु-चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा हेतु चंद पशु-चिकित्सा महाविद्यालयों की स्थापना की थी. देश की कृषि एवं पशु-पालन एक क्रांति चाह रहा था. ऐसे में कोई मसीहा या तारनहार चाहिये थे. पशु-पालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में एक महान एवं प्रसिद्ध व्यक्तित्व डा. चिंतामणि सिंह, जिन्हें भारतीय पशु चिकित्सा विज्ञान जगत का 'धर्मपिता' माना जाता है, ने इस विषय के विकास हेतु चहुंमुखी कार्य किया. यह वर्ष डा. सिंह का जन्म शताब्दी वर्ष (1922-2022) है. आइये हम डा. सिंह के द्वारा पशु चिकित्सा क्षेत्र में किए गये कार्यों का स्मरण करें एवं आज के युवा उनके जीवन से प्रेरणा लें.

चिंतामणि का जन्म उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल जिले जौनपुर के बेलांव गाँव में रहने वाले एक ठाकुर दम्पति वंशीधर सिंह तथा श्रीमती यशोधरा के घर चैत रामनवमी पर्व के आस-पास, सन 1922 में हुआ था. उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल से प्राप्त की. वहाँ उनकी उम्र पाँच वर्ष से कम होने के कारण उनके स्कूल में दाखिले में कठिनाई आई. परन्तु पढ़ाई की ओर उनका रुझान देखते हुए उनके पिता के कहने पर स्कूल के मुंशी ने उनकी आयु बढ़ाकर जन्म तिथि को 30 नवंबर, 1922 लिख दिया तथा उन्हें स्कूल में प्रवेश दे दिया. वे बचपन से ही पढ़ाई में काफी तेज थे. चिंतामणि अपने गाँव के पहले युवा थे, जो पढ़ाई के लिए कॉलेज गये. उन्होंने बनारस के उदय प्रताप कॉलेज में इण्टर विज्ञान में प्रवेश लिया तथा वहाँ की उत्तम शिक्षा का उनके व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा. वे नेताजी सुभाष चंद्र बोस से बहुत प्रभावित थे. आगे चलकर बिहार वेटरनरी कॉलेज, पटना में उनका प्रवेश हुआ. कॉलेज में चिंतामणि को यह जानकर अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि छात्रों के शरीर रचना विज्ञान अर्थात एनाटोमी विषय में प्रशंसनीय अंक नहीं आते थे तथा कभी डिस्टिंक्शन भी प्राप्त नहीं होती थी. अतः उन्होंने उसी क्षण यह संकल्प लिया कि वे शरीर रचना विज्ञान विषय में सर्वोत्तम अंक लाने का प्रयास करेंगे. उन्होंने मेडिकल कॉलेज में पढ़ रहे अपने कुछ मित्रों से एनाटोमी विषय की पुस्तकें प्राप्त कीं तथा अपने लिए हुए संकल्प को पूर्ण करने के लिए पढ़ाई में जुट गये. अंत में जब वार्षिक परीक्षा का परिणाम आया तो चिंतामणि की

आँखे नम हो गयीं, क्योंकि परीक्षक महोदय ने उनके उत्तम प्रदर्शन के लिए उन्हें एनाटोमी विषय में डिस्टिंक्शन प्रदान किया था और इस परीक्षा परिणाम के साथ उनका लिया हुआ संकल्प पूर्ण हो गया. एनाटोमी विषय का उत्कृष्ट ज्ञान होने के कारण वे भविष्य में श्रेष्ठ पैथोलोजिस्ट बने. कॉलेज के समय में मेडिकल कॉलेज के अपने कुछ मित्रों तथा मानव चिकित्सकों से उनके अच्छे सम्बन्ध थे जिसके कारण उनके पास मानव चिकित्सा सम्बन्धी कुछ पुस्तकें भी थीं तथा मित्रों से वार्तालाप के दौरान उन्होंने मानव रोगों एवं उनके निवारण हेतु औषधियों का ज्ञान भी प्राप्त किया था. अतः जब वे कॉलेज की छुट्टियों में अपने घर जाते थे तो गाँव के रोगियों का, बिना किसी धनराशि की अपेक्षा किए, करुणा तथा सेवाभाव से उपचार करते थे. सन् 1947 में डा. सिंह ने बिहार वेटरनरी कॉलेज से स्नातक (जीबीवीसी) की उपाधि पूर्ण की. अपने अध्ययन काल में कठिन परिश्रम तथा सच्ची लगन से पढ़ाई करके उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जिसके लिये उन्हें स्नातक उपाधि के साथ स्वर्ण पदक से भी पुरस्कृत किया गया.

डा. सिंह का मातृ विद्यालय बिहार वेटरनरी कॉलेज, पटना

चिंतामणि जब वेटरनरी कॉलेज के अंतिम वर्ष के छात्र थे, तब उनका विवाह आजमगढ़ जिले के एक गाँव डंगरहा निवासी ठाकुर रूप सिंह की पुत्री कुमारी चंद्रजोत के साथ तय हुआ. चंद्रजोत पढ़ाई में काफी तेज थीं. उन्होंने प्राथमिक शिक्षा गाँव के स्कूल से ली थी तथा आगे पढ़ाई भी करना चाहती थीं. किन्तु उनकी माता तथा परिवारजनों ने उनके पिता के निधन के बाद उन्हें आगे पढ़ने की अनुमति नहीं दी तथा उनका विवाह ठाकुर वंशीधर सिंह के पुत्र डा. चिंतामणि सिंह के साथ तय कर दिया. सन 1946 में पारम्परिक रीति-रिवाजों से चिंतामणि तथा चंद्रजोत का विवाह संपन्न हुआ. विवाह के कुछ माह उपरांत डा. सिंह फूलपुर, इलाहबाद आ गए तथा वहाँ कुछ दिनों बाद चंद्रजोत ने राजकीय नार्मल महिला विद्यालय, इलाहबाद में एचटीसी में प्रवेश लेकर अपनी पढ़ाई जारी रखी.

प्रारंभिक क्षेत्रीय सेवाकाल- डा. सिंह ने सन् 1947 में पशु पालन विभाग, उत्तर प्रदेश में सहायक पशु चिकित्सक के पद पर फूलपुर, इलाहबाद में अपना योगदान दिया. आगे चलकर वे पशु पालन विभाग में सर्किल इंस्पेक्टर के पद पर नियुक्त हुए. इसी दौरान उत्तर प्रदेश के गोरखपुर तथा देवरिया जिले में भैसों की किसी रोग के कारण अत्यधिक मृत्यु होने लगी. इस गंभीर समस्या की खबर विधान सभा तक पहुँच गई तथा प्रदेश सरकार ने तत्काल ही रोग प्रकोप अन्वेषण व इसके रोकथाम के लिए निर्देश दिया. डा. सिंह को इस कार्य की जिम्मेदारी सौंपी गयी. अन्वेषण के दौरान उन्होंने पाया की भैंसें ट्रिपनोसोमा नामक परजीवी रोग से ग्रस्त हैं, तथा उन्होंने इस रोग का उपचार शुरु किया. उनके उपचार से भैंसे स्वस्थ होने लगीं तथा यह खबर चारों ओर फैल गयी. शिष्टाचार वश गाँव के ठाकुर साहब ने उन्हें भोजन पर आमंत्रित किया. भोजन पर वार्तालाप के दौरान डा. सिंह ने अपने अधीनस्थ ग्रामीण क्षेत्रों के पशु चिकित्सा दल के लोगों की भोजन-पानी की समस्या से उन्हें अवगत कराया, जिसपर ठकुराइन ने सभी को भोजन आदि उनके स्थान पर उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया. इस प्रकार डा. सिंह ने अपने पशु चिकित्सा दल के साथियों की भी सहायता की. उन दिनों पशुओं में रिंडरपेस्ट की महामारी का अत्यधिक प्रकोप होता था, तथा इस रोग के कारण सैकड़ों पशुओं की मृत्यु हुआ करती थी. एक दिन तो डा. सिंह ने इन रोगी पशुओं के उपचार हेतु 70-75 किलोमीटर साईकिल चलायी. इस रोग के निवारण हेतु उन्होंने उच्च अधिकारियों से परामर्श भी किया, किन्तु कोई आशाजनक हल प्राप्त नहीं हो सका. डा. सिंह के कार्य से पशु पालन विभाग के निदेशक, उप-निदेशक तथा अन्य अधिकारी अत्यंत प्रभावित हुए, क्योंकि वे बहुत मेहनती थे तथा अपने कार्य को पूरी निष्ठा से पूर्ण करते थे. इसी कारण से सन् 1949 में निदेशक, पशु पालन विभाग ने उन्हें उप-निदेशक, इलाहाबाद में पदस्थ करने का निर्णय लिया. सन् 1950 में वे वेटरनरी कॉलेज, मथुरा में डेमांस्ट्रेटर/शोध सहायक के पद पर नियुक्त हुए. वे प्रथम चरण में मथुरा में सन 1952 तक सेवारत रहे.

अमेरिका में उच्च अध्ययन- वेटरनरी कॉलेज, मथुरा पहुँचते-पहुँचते उन्होंने उच्च अध्ययन हेतु अमेरिका जाने का दृढ़ निश्चय कर लिया था. सौभाग्यवश उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें अमेरिका में उच्च अध्ययन हेतु स्वीकृति प्रदान कर दी तथा आर्थिक सहायता प्रदान करने को आश्वस्त किया. यह समाचार इलाहबाद के

लीडर अखबार में छपा था तथा डॉक्टर सिंह के पिता को भी यह खबर मिल गयी थी, किन्तु अभी उन्हें उनके जाने की निश्चित तिथि 15 अगस्त, 1952 का पता नहीं था. इसलिए खबर मिलते ही वे तुरंत प्रसन्नता पूर्वक मथुरा पहुँच गए ताकि डा. सिंह को समुद्री यात्रा के लिए विदा कर सकें. इस दौरान डा. सिंह को उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से एक चिट्ठी मिली जिसमें सरकार ने वित्त के अभाव का तर्क देते हुए उनके अमेरिका जाने को एक-वर्ष के लिये स्थगित कर दिया था. जब उनके पिता को इस बात का पता चला तो उन्होंने अपने खर्च पर डा. सिंह को अमेरिका भेजने का निश्चय कर लिया. संयोगवश उनके टिकट, वीजा तथा अन्य जरूरी कागजात की व्यवस्था हो गयी थी तथा उन्हें विधिवत विदेश यात्रा करने की अनुमति भी प्राप्त हो गयी. डा. सिंह ने सन् 1954 में एमएस की उपाधि तथा सन् 1956 में पीएचडी की उपाधि पशु चिकित्सा विकृति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. सी.सी. मॉरिल के निर्देशन में स्कूल फॉर एडवांस ग्रेजुएट स्टडीज, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड एप्लाइड साइंस, मिशिगन राज्य, ईस्ट लांसिग, अमेरिका से पूर्ण की. पीएचडी के दौरान डॉक्टर सिंह ने प्रमुख विषय पशु चिकित्सा विज्ञान के अतिरिक्त सूक्ष्म जीवाणु विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं पशु पालन विषयों का अध्ययन किया. उनके शोध-प्रबंध का शीर्षक था- 'पैथोलॉजी एंड बैक्टीरिओलाजी ऑफ एबॉर्शन एंड पेरीनेटल डेथ ऑफ यंग इन रैबिट, शीप एंड गोट इनडियूस्ड बाई लिस्टीरिआ मोनोसाइटोजेनीस' (लिस्टेरिया मोनोसाइटोजेन्स द्वारा प्रेरित खरगोश, भेड़ और बकरी में गर्भपात और नवजात शिशुओं की प्रसवकालीन मृत्यु की पैथोलॉजी और बैक्टीरियोलॉजी). सन् 1957 में डा. सिंह पशु चिकित्सा विषाणु संस्थान, कार्नेल विश्वविद्यालय, अमेरिका में पोस्ट-डाक्टरल फेलो रहे तथा इस दौरान उन्होंने 'कैनाइन हिपेटाइटिस' विषाणु रोग के टीके की खोज प्रारम्भ की तथा उसमें सफल हुए. सन् 1957 में वे भारत वापस लौटे तथा वेटरनरी कॉलेज, मथुरा में अपना पुनः योगदान दिया.

मिशीगन राज्य विश्व-विद्यालय, ईस्ट लांसिग, अमेरिका से डा. सिंह ने उच्च शिक्षा प्राप्त की

डा. सिंह की प्रथम कार्यस्थली वेटरनरी कॉलेज, मथुरा

प्रारंभिक शैक्षणिक उपलब्धियाँ- सन् 1957-1964 के दौरान डा. सिंह ने वेटरनरी कॉलेज, मथुरा में विकृति विज्ञान एवं जीवाणु विज्ञान विभाग में प्राध्यापक के पद पर योगदान दिया. यह कार्यकाल उनके जीवन का 'नया मोड़' सिद्ध हुआ, क्योंकि इस काल में उनके अध्ययन तथा शोध कार्यों की ख्याति देश-विदेश में फैल गयी तथा उनके मार्गदर्शन में शोध करने के लिये स्नातकोत्तर छात्रों की कतार लग गयी. यहाँ उन्होंने मुर्गियों के नमूनों की हिस्टोपैथोलॉजी स्लाइड्स का निरीक्षण किया तथा फेफड़ों में माइकोप्लाज्मा रोगाणु की विशिष्ट क्षतियाँ पायीं. तब उन्होंने मुर्गियों के सीरम के नमूनों को अमेरिका भेजा तथा वहाँ से आई रिपोर्ट को देखकर उन्होंने अपने छात्र डा. आर.सी. पाठक (पूर्व डीन, वेटरनरी कॉलेज, मथुरा) को उसे आईसोलेट करने को कहा. कुछ दिनों पश्चात इस रोगजनक का भारत में प्रथम बार आईसोलेशन हुआ. उन्होंने अपने इस कार्य को पुणे में आयोजित हुई अखिल-भारतीय पशु रोग अन्वेषण संगोष्ठी में विस्तार से भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर के विकृति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. कैप्टन एस.बी.वी. राव तथा निदेशक डा. लक्ष्मी सहाय के समक्ष प्रस्तुत करते हुए माईकोप्लाज्मा रोगाणु के आईसोलेशन की नई विधि के बारे में बताया जो वे अमेरिका से सीख कर आये थे. इसमें उन्होंने एक विशेष रसायन का प्रयोग किया था जो मृतजीवी जीवाणुओं की वृद्धि को रोकता था तथा उन्होंने माईकोप्लाज्मा रोगाणु की कॉलोनी का भी वर्णन किया. उनके इस शोध कार्य प्रस्तुति का सकारात्मक असर हुआ तथा उन्हें सर्वत्र प्रशंसा और व्यापक प्रसिद्धि प्राप्त हुई. भविष्य में डा. सिंह ने मुर्गियों के अन्य आर्थिक दृष्टि से गंभीर संक्रामक रोगों जैसे इन्फेक्शियस ब्रोंकाइटिस, इन्फेक्शियस लैरिंगोट्रेकाइटिस तथा साल्मोनेल्लता पर अन्वेषण किया. प्रोफेसर सिंह कॉलेज में स्नातकोत्तर कार्यक्रम के अंतर्गत नयी सेमेस्टर शिक्षा व परीक्षा प्रणाली (क्विज, मिड टर्म तथा फाईनल), नये

विषयों में स्नातकोत्तर व पीएचडी के कार्यक्रमों को शुरु करवाना चाहते थे. कुछ प्रोफेसर उन दिनों के जीवाणु, विकृति तथा परजीवी विज्ञान विषयों में मिली-जुली पीएचडी उपाधि के समर्थन में थे, परन्तु डा. सिंह तीनों विषयों में अलग-अलग उपाधि कार्यक्रम शुरु करवाना चाहते थे. वे पशु चिकित्सा संकाय के डीन भी थे और इस विषय में चर्चा के लिए पशु चिकित्सा संकाय की बैठक आयोजित की गयी, जिसमें उन्होंने रजिस्ट्रार तथा कुलपति महोदय के समक्ष तर्क सहित उपर्युक्त विषय में अपनी राय रखी जिसपर उन्हें रजिस्ट्रार तथा कुलपति महोदय की सहमति प्राप्त हुई और तब से तीनों विषयों में अलग-अलग पीएचडी उपाधि कार्यक्रम शुरु करने का फैसला हुआ.

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान का मातृ परिसर मुक्तेश्वर, नैनीताल से डा. सिंह का भावात्मक लगाव था

श्रेष्ठ प्राध्यापक व शोधकर्ता- प्रोफेसर सिंह जब छात्रों को पढ़ाते थे, तो उनका सदैव प्रयास रहता था कि वे छात्रों को नवीनतम मौलिक ज्ञान प्रदान करें. वे छात्रों को पढ़ाने के प्रति अत्यंत समर्पित थे और किसी भी बिंदु को अधिक रुचि लेकर समझाते थे जिस के कारण उनका व्याख्यान कक्षा की समय सीमा पूर्ण होने के बाद भी चलता रहता था. स्नातकोत्तर/ शोध छात्रों को वे नवीनतम शोध कार्य सौंपते थे तथा उस विषय में संपूर्ण अध्ययन और सन्दर्भ एकत्रित करने का पर्याप्त अवसर प्रदान करते थे. उनकी सदैव कामना रहती थी कि छात्रों के शोध परिणाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हों, जिसके लिए वे पूर्ण रूप से सहायता के लिए तत्पर रहते थे. वे विदेशों की मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं से शोधकार्य हेतु आईसोलेट्स, एंटीजन, एंटीबॉडीस तथा अन्य आवश्यक रसायन मंगवाते थे और पुष्टिकरण हेतु अपने आईसोलेट्स को विदेशों में भेजते थे. यही कारण था कि उनके छात्रों के शोधपत्र विश्व प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय जर्नल जैसे नेचर, जर्नल ऑफ कम्परेटिव पैथोलॉजी आदि में प्रकाशित होते थे, जिससे उनकी एवं उनके छात्रों की उपलब्धियां सर्वत्र फैल गयीं. सन् 1964 में प्रोफेसर सिंह का वेटरनरी कॉलेज, हिसार में अधिष्ठाता के पद पर चयन हुआ तथा यहाँ वे 1966 तक कार्यरत रहे.

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर के निदेशक डा. सिंह

सन् 1966 में डा. सिंह का चयन भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर निदेशक के पद पर हुआ. वे यहाँ के सब से युवा व ऊर्जावान निदेशक रहे. यहाँ वे भारतीय भैंसों में लिम्फोसार्कोमा नामक अमेरिका की पीएल 480 परियोजना के मुख्य अन्वेषक थे तथा उनके मार्गदर्शन में गौवंशीय लिम्फोसार्कोमा का संचरण सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ. प्रोफेसर सिंह अपनी सर्वोत्तम शोध भैंस के फेफड़ों में लिम्फोसार्कोमा को मानते थे, जिसकी पुष्टि अमेरिका की पशु कैंसर प्रयोगशाला ने भी की थी. यह शोध कार्य उनके छात्र डा. बलवंत सिंह (पूर्व डीन, वेटरनरी कॉलेज, लुधियाना) द्वारा किया गया था, जिसकी इटली की ल्यूकीमिया कॉन्फ्रेंस में प्रस्तुति हुई थी. प्रोफेसर सिंह के अनुसार भैंसों में यह प्रथम रिपोर्ट थी, अतः कम्परेटिव पैथोलॉजी की दृष्टि से इस शोध का अत्यधिक महत्व था. भविष्य में हुए शोध कार्यों द्वारा लिम्फोसार्कोमा भैंसों में एक अलग विषाणुजनित रोग सिद्ध हुआ.

डा. सिंह भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को मेमनों की इरेडिएटेड लंगवर्म वैक्सीन के बारे में बताते हुए

महत्वपूर्ण वैज्ञानिक व प्रशासनिक विकास योगदान - सन् 1966 से 1982 तक डा. सिंह भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर में निदेशक के पद पर कार्यरत रहे. इन 16 वर्षों के कार्यकाल में उन्होंने अपने अथक परिश्रम द्वारा 5 विभाग वाले संस्थान को, 21 विभागों व कई परिसरों/क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों वाले संस्थान को विकसित करके अंतरराष्ट्रीय महत्व के संस्थान में परिवर्तित कर दिया. उन्हें संस्थान के मातृ परिसर मुक्तेश्वर से अत्यधिक लगाव था इसका एक कारण यह भी था कि उनकी पशु विषाणु रोगों में काफी रुचि थी. इसलिये अपने कार्यकाल में उन्होंने मुक्तेश्वर परिसर को सुदृढ करके एक विशेष दर्जा प्रदान किया. उनके कार्यकाल के दौरान मुक्तेश्वर परिसर में कई पशु विषाणु रोगों जैसे रिंडरपेस्ट, भेड़-बकरी चेचक, खुरपका एवं मुँहपका, शूकर ज्वर, अफ्रीकी अश्व रुग्णता आदि रोगों के निदान तथा टीका विकास पर अति उत्कृष्ट शोध कार्य हुए. यहाँ अनेक प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय गोष्ठियां भी आयोजित हुई. उनके अथक प्रयास से मुक्तेश्वर में पश्मीना बकरी फार्म की स्थापना संभव हो सकी. वहाँ के वैज्ञानिकों के योगदान के कारण मुक्तेश्वर परिसर विकसित हुआ तथा परिसर के स्टाफ के बच्चों की शिक्षा हेतु केंद्रीय विद्यालय की भी स्थापना हुई, जो डा. सिंह के कार्यकाल की उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक थी. सन् 1972 में देश की स्वतंत्रता के पच्चीस वर्ष पूर्ण होने पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के महा निदेशक डा. एम.एस. स्वामीनाथन तथा डा. सिंह के अथक प्रयासों से भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री वी.वी. गिरी, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर में पधारे तथा हजारों दर्शकों की उपस्थिति में 19 मार्च, 1972 को यहाँ एक 400 कक्षों वाले मॉडूलर प्रयोगशाला भवन की आधार शिला रखी गई. वर्तमान में इस भवन में पशु स्वास्थ्य सम्बंधी विभाग स्थित हैं. इस दौरान संस्थान के श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर केंद्र में इरेडिएटेड लंगवर्म वैक्सीन परियोजना के अंतर्गत विशेष शोध कार्य हुआ तथा इस तकनीक से विकसित टीके कश्मीर के पर्वतीय मेमनों के लिए अत्यंत प्रभावकारी सिद्ध हुए. इसी वर्ष डा. सिंह के प्रयासों से संस्थान का बंगलौर परिसर स्थापित किया गया, जिसमें खुरपका एवं मुँहपका रोग पर शोध प्रारम्भ हुआ तथा रोग के टीके का उत्पादन भी प्रारम्भ किया गया. सन् 1976 से जटिल फर्मेंटेशन तकनीक का प्रयोग करके प्रतिवर्ष 30-40 लाख पॉलीवेलेंट खुरपका व मुँहपका के टीकों का उत्पादन आरम्भ हुआ जिससे इस रोग के नियंत्रण में सहायता मिली.

डा. सिंह भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री वी.वी. गिरी को संस्थान भ्रमण करवाते हुए

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर का मॉडूलर प्रयोगशाला भवन

डा. सिंह के निदेशक काल में सन् 1975 में फरह मकदूम, मथुरा में भेड़ तथा बकरी शोध केंद्र स्थापित किया गया जोकि बाद में केंद्रीय बकरी शोध संस्थान बना. संस्थान के कुक्कुट विज्ञान विभाग में उच्च अंडा व मांस उत्पादक कुक्कुट नस्लें विकसित हुईं. यह विभाग, 2 नवंबर, 1976 को एक नया संस्थान केंद्रीय पक्षी शोध संस्थान, इज्जतनगर बना. यहां मुर्गियों पर बहुत शोध कार्य हुए. सन् 1959 में पालमपुर केंद्र की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र की पशु पोषण की समस्याओं को सुलझाना था. इस प्रयोगशाला को स्थापित करने के लिए डा. एस.एस. नेगी तथा डा. आर.एन. पाल ने डा. सिंह की पूर्ण सहायता की. यहाँ पर बांज, लैंटाना, ब्रेकेन फर्न आदि के विषैले तत्वों पर खोज हुई तथा इसपर अनेक शोधपत्र भी प्रकाशित किए गये. लैंटाना के दो विष तत्व लैंटाडीन सी तथा डी का पूर्ण रूप से चित्रण किया गया. डा. सिंह के प्रयासों के फलस्वरूप सन् 1970 में संस्थान के पूर्वी क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, कलकत्ता तथा सन् 1973 में क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, श्रीनगर की स्थापना हुई. डा. सिंह की पशु चिकित्सा जन स्वास्थ्य विषय में बहुत रुचि थी. उन्होंने पशुजन्य रोगों यथा साल्मोनेल्लता, ब्रूसेल्लता, लिस्टीरियता, रेबीज आदि रोगों पर शोध कार्यों को सदैव बढ़ावा दिया. जब वे वेटरनरी कॉलेज, मथुरा में सेवारत थे, तब उन्होंने जन स्वास्थ्य की दृष्टि से

साल्मोनेल्ला जीवाणुओं के कई नये तथा महत्त्वपूर्ण प्रकार की खोज की थी तथा इसके अतिरिक्त उन्होंने इ. कोलाई और फाज टाइपिंग पर भी शोध कार्य किया था. सन् 1976 में उनके प्रयासों से भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर में राष्ट्रीय साल्मोनेल्ला सन्दर्भ केंद्र की स्थापना हुई. डा. सिंह विश्व स्वास्थ्य संगठन, नई दिल्ली के 22 मार्च, 1985 से 30 अप्रैल, 1985 तक भूटान के राष्ट्रीय रेबीज नियंत्रण कार्य के सलाहकार रहे तथा दस वर्षों से अधिक समय तक जेनेवा, स्विट्जरलैंड के विश्व स्वास्थ्य संगठन के पशुजन्य रोगों के विशेषज्ञ सलाहकार दल के सदस्य भी रहे. उनके कार्यों से प्रभावित होकर लिस्टर संस्थान ने उन्हें फेलोशिप प्रदान किया, जोकि प्रायः मानव चिकित्सकों को ही दी जाती थी. उनके गतिशील नेतृत्व के अंतर्गत भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के विभिन्न परिसरों में अत्यधिक मूलभूत परासंरचना व सुविधाएं विकसित हुईं तथा उनके सानिध्य में हुई उच्च शोध एवं उपलब्धियों को देखते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान को राष्ट्रीय संस्थान की मान्यता प्रदान की. उनके कार्यकाल के दौरान संस्थान में पशुओं एवं कुक्कुटों के टीका विकास, गुणवत्ता नियंत्रण व उत्पादन, पशु रोगों के निदान, पशुजन्य रोगों, पशु परजीवी रोगों, कुक्कुट उत्पादन, पशुओं के आहार व चारे, गौ, भैंस व सूकर प्रजनन, पशु पुनरुत्पादन, पशुधन उत्पादन प्रौद्योगिकी, पशु प्रसार शिक्षा आदि पर अति उत्कृष्ट शोध कार्य हुए. संस्थान ने देश को पशुओं के कई नये टीके, रोगों के निदान की आधुनिक विधियां, उच्च अंडा व मांस उत्पादक कुक्कुट नस्लें, जापानी बटेर, पशु आहार प्रौद्योगिकी, संकर गौ व सूकर नस्लें, प्रशिक्षित मानव संसाधन आदि दिए. डा. सिंह 30 नवंबर, 1982 को सम्मानपूर्वक सेवानिवृत्त हुए. सन् 1970 के दशक में रूहेलखंड विश्व-विद्यालय, बरेली की स्थापना के पश्चात् भा.प.चि.अ.सं., इज्जतनगर का पशु-विज्ञान महाविद्यालय इस नये विश्व-विद्यालय से संबंधित किया गया. डा. सिंह इससे प्रसन्न नहीं थे तथा वे संस्थान में मानक शिक्षा हेतु समतुल्य विश्व-विद्यालय बनाना चाहते थे. इसके लिये वे कई वर्षों से प्रयासरत थे. हर्ष का विषय है उनका यह अधूरा कार्य उनके ही शिष्य डा. बी.एस. राज्या के निदेशक काल में पूर्ण हुआ तथा सन् 1983 में संस्थान देश का प्रथम पशु-चिकित्सा विश्व-विद्यालय बना. सेवानिवृत्ति के पश्चात डा. सिंह को सन् 1988 में पुणे में आयोजित हुई भारतीय विज्ञान कांग्रेस की 75वीं वार्षिक सभा में 'रेट्रोवाइरस एस बायोलॉजिकल थ्रीट इन मैन एंड एनीमल्स' विषय पर व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया. व्याख्यान के दौरान उन्होंने सम्बंधित कार्यों तथा उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए भेड़-बकरियों में होने वाले स्लो विषाणु रोग विस्ना-मेडी के बारे में भी बताया. अपने प्रभावी व्याख्यान के अंत में उन्होंने लेंटी विषाणुओं द्वारा उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का भी उल्लेख किया.

डा. सिंह भारत के कृषि मंत्री श्री फखरुद्दीन अली अहमद तथा डा. स्वामीनाथन को संस्थान भ्रमण करवाते हुए

डा. सी.एम. सिंह महत्वपूर्ण योगदान

- उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल ग्रामीण परिवेश में जन्मे पशु चिकित्सा विज्ञानी डा. चिंतामणि सिंह अत्यंत मेधावी, परिश्रमी, उत्साही, श्रेष्ठ शिक्षक, प्रकांड वक्ता, ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक, कठोर प्रशासक, ईमानदार तथा दूरदर्शी थे.
- डा. सी.एम. सिंह ने वेटरनरी कॉलेज, मथुरा में अध्यापन एवं पशुओं के संक्रामक रोगों पर उत्कृष्ट शोध कार्यों द्वारा देश/विदेश में प्रसिद्धि पाई.
- प्रोफेसर सिंह ने वेटरनरी कॉलेज, मथुरा में नई सेमेस्टर शिक्षा व परीक्षा प्रणाली (क्विज, मिड टर्म तथा फाईनल), प्रणाली, नये विषयों में स्नातकोत्तर व पीएचडी के कार्यक्रमों को शुरु करवाया जिसे देश के अन्य वेटरनरी कॉलेजों में भी अपनाया गया.
- भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर में निदेशक के पद पर कार्यरत डॉ. सिंह ने अपने अथक परिश्रम द्वारा 5 विभाग वाले संस्थान को, 21 विभागों व कई परिसरों/क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों वाले संस्थान में विकास करके अंतरराष्ट्रीय महत्व के संस्थान में परिवर्तित किया.
- उनके कार्यकाल के दौरान संस्थान ने देश को पशुओं के कई नये टीके, रोगों के निदान की आधुनिक विधियां, उच्च अंडा व मांस उत्पादक कुक्कुट नस्लें, पशु आहार प्रौद्योगिकी, संकर गौ व सूकर नस्लें, प्रशिक्षित मानव संसाधन आदि दिए. ये कार्य देश में रिंडरपेस्ट उन्मूलन, खुरपका व मुँहपका नियंत्रण व श्वेत क्रांति आदि में सहायक हुए.
- डा. सिंह ने पशु-जन्य रोगों-यथा साल्मोनेल्लता, ब्रूसेल्लता, लिस्टीरियता, रेबीज आदि रोगों पर शोध कार्यों को सदैव बढ़ावा दिया.
- डा. सिंह राष्ट्रीय पशु-चिकित्सा विज्ञान अकादमी (भारत) तथा भारतीय पशु-चिकित्सा परिषद के

संस्थापक अध्यक्ष चुने गये तथा उन्होंने पशु चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र में व्यापक सुधार किये.

- प्रो. सिंह के महत्वपूर्ण योगदानों को देखते हुये उन्हें अनेक मान, सम्मान एवं पुरस्कार मिले तथा भारतीय पशु चिकित्सा विज्ञान का अगुवा, धर्मपिता, भीष्म पितामह, प्रेरणाश्रोत, स्वप्न-दर्शी, कर्मयोगी आदि सम्मानित नामों से पुकारा गया.

डा. सिंह को सन् 1993 में राष्ट्रीय पशु-चिकित्सा विज्ञान अकादमी (भारत), नई दिल्ली का संस्थापक अध्यक्ष चुना गया. इस संस्था के उद्देश्य थे- पशु-चिकित्सा विज्ञान के विकास हेतु नीति निर्माण में वैज्ञानिकों के मत को ध्यान में रखकर, पशु कल्याण की प्रोन्नति द्वारा पशुधन क्षेत्र का राष्ट्रीय अर्थशास्त्र में महत्व बढ़ाने का प्रयास करना. अकादमी के सदस्य इस विषय के अनुसंधान व विकास हेतु देश के सबसे बड़े प्रबुद्ध मंडल सिद्ध हुए हैं. इसी प्रकार से उन्हें सन् 2000 में भारतीय पशु-चिकित्सा परिषद, नई दिल्ली का संस्थापक अध्यक्ष चुना गया. भारतीय पशु चिकित्सा परिषद एक वैधानिक निकाय है, जो पशु चिकित्सा पद्धति नियमन के लिये प्रावधान बनाने और पशु चिकित्सा शिक्षा के मानकों को विनियमित करने, भारतीय पशु चिकित्सकों के रजिस्टर को बनाने व उसके रखरखाव को विनियमित करने आदि के लिये गठित की गयी है. इन पदों पर रह कर उन्होंने पशु चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र में व्यापक सुधार किये.

डा. सिंह भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री आर. वैंकटरमन के साथ विश्व-विद्यालय के दीक्षांत समारोह में

व्यक्तित्व, मान, सम्मान एवं पुरस्कार- ग्रामीण परिवेश में जन्मे डा. सिंह अत्यंत मेधावी, उत्साही, परिश्रमी, ईमानदार, कठोर प्रशासक व दूरदर्शी थे. देश में विदेशज पशु रोगों के निदान व शोध कार्य हेतु भोपाल स्थित उच्च सुरक्षा पशु रोग प्रयोगशाला की स्थापना की परिकल्पना उनके द्वारा ही की गई थी. उनका यह अधूरा कार्य उनके ही शिष्य डा. जी.सी. मोहंती के संयुक्त-निदेशक काल में पूर्ण हुआ. डा. सिंह का जीवन अत्यंत सादगी से परिपूर्ण था तथा उन्होंने कभी भी किसी भी प्रकार के दिखावे को महत्व नहीं दिया. वे धार्मिक, दयालु प्रवृत्ति तथा सादा जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति थे. वे गीता में आस्था रखते थे. वे एक श्रेष्ठ शिक्षक थे एवं किसी भी सभा, संगोष्ठी तथा कक्षा में निरंतर बिना किसी थकावट के कई घंटे तक व्याख्यान दे सकते थे. ऐसा उनके निरंतर अध्ययन करने से संभव हुआ था. वे प्रतिभाशाली छात्रों तथा वैज्ञानिकों का सदैव सम्मान करते थे तथा उनकी उच्च पदों पर नियुक्ति हेतु सदैव प्रयासरत रहते थे. बचपन से ही डा. सिंह पुस्तक प्रेमी थे. उनके घर में विभिन्न विषयों की अनेक किताबें थीं तथा पशु चिकित्सा विज्ञान की पुस्तकों का उनका अपना एक विशाल संग्रह था. डा. सिंह ने संस्थान में कार्यरत सैकड़ों आकस्मिक श्रमिकों की सेवा को स्थायी किया जिसके लिये श्रमिक उनके प्रति अत्यधिक कृतज्ञ थे.

डा. सिंह को भारत के चार प्रमुख कृषि/पशु विज्ञान विश्व-विद्यालयों यथा चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व-विद्यालय, कानपुर (1982), समतुल्य विश्व-विद्यालय, भा.प.चि.अ.सं., इज्जतनगर, बरेली (1990), गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व-विद्यालय, पंतनगर (1997) तथा पश्चिमी बंगाल पशु तथा मात्स्यिकी विज्ञान विश्व-विद्यालय, कोलकाता (1999) ने 'डीएससी' की मानद उपाधि से सम्मानित किया. डा. सिंह के योगदान से ऋणी पशु चिकित्सा संघों ने उनके सम्मान में कई 'डा. सी.एम. सिंह स्मृति पुरस्कार' प्रारम्भ किए. उनके सम्मान में भारतीय पशु चिकित्सक विकृति विज्ञानी एसोसिएशन सन् 1982 से इंडियन जर्नल ऑफ वेटरनरी पैथोलॉजी में प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ लेख को प्रति वर्ष 'डा. सी.एम. सिंह स्मृति पुरस्कार' से सम्मानित करती है. इसी प्रकार इंडियन जर्नल ऑफ कम्परेटिव माइक्रोबायोलोजी, इम्यूनोलॉजी एवं इन्फेक्शियस डिसीसेस जर्नल में प्रकाशित होने वाले सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र को यह पुरस्कार दिया जाता है. डा. सिंह क्रीड़ा प्रेमी थे तथा संस्थान में खेल-कूद को अत्यधिक प्रोत्साहन देते थे. उन्होंने सन् 1967 में संस्थान में क्रिकेट हेतु एक ट्रॉफी प्रदान की, जो प्रति वर्ष स्टाफ तथा छात्रों के मध्य क्रिकेट मैच की विजेता टीम को दी जाती है.

सन् 2002 में डा. सी.एम. सिंह इंडोवमेंट ट्रस्ट ने उनकी स्मृति में 'डा. सी.एम. सिंह एवार्ड फार बेस्ट पीएचडी स्कालर' प्रारंभ किया. यह पुरस्कार समतुल्य विश्व-विद्यालय, भा.प.चि.अ.सं., इज्जतनगर द्वारा दिया जाता है. अब तक 10 से अधिक मेधावी छात्र इस पुरस्कार

से सम्मानित हो चुके हैं. डा. सी.एम. सिंह इंडोवमेंट, ट्रस्ट, बरेली डा. सिंह के सम्मान में डा. सी.एम. सिंह स्मृति व्याख्यान आयोजित करता है. अब तक ऐसे 10 व्याख्यान आयोजित हो चुके हैं. इसी प्रकार से ट्रस्ट डा. सी.एम. सिंह सम्मान पुरस्कार, डा. सी.एम. सिंह-शालिहोत्र पुरस्कार, डा. सी.एम. सिंह- डा. आर.डी. शर्मा पुरस्कार आदि से उत्कृष्ट भारतीय पशु-चिकित्साविदों आदि को सम्मानित करता है. ट्रस्ट पशु-चिकित्सा विज्ञान के छात्रों व संकाय हेतु हिन्दी व अंग्रेजी में अखिल-भारतीय डा. सी.एम. सिंह स्मृति लेख प्रतियोगिताएं आयोजित करता है. राष्ट्रीय पशु-चिकिसा विज्ञान अकादमी (भारत), नई दिल्ली ने उनकी स्मृति व सम्मान में 'डा. सी.एम. सिंह अवार्ड फार एक्सीलेंस इन वेटरनरी साइंस' को सन् 2021 में प्रारंभ किया. डा. सिंह पर एक लघु डाक्यूमेंटरीं फिल्म 'प्रेरणाश्रोत' भी बनी है. लेखक द्वारा डा. सिंह के जीवन एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों पर दो पुस्तकें भी लिखी गयी हैं. प्रथम पुस्तक 'डा. चिंतामणि सिंह जीवनकथा तथा उनकी पशु-चिकित्सा विज्ञान को देन' सन् 2000 में प्रकाशित हुई. दूसरी पुस्तक 'डा. सी.एम. सिंहः लाईफ, साइंटिफिक कंट्रिब्यूशंस एंड मैम्योर्स (विद इलस्ट्रेशंस)' सन् 2006 में प्रकाशित हुई. इनमें डा. सिंह के जीवन व योगदान की विस्तृत जानकारियां दी गयी हैं. देश के विख्यात पशु-चिकित्साविदों ने उनकी स्मृति को याद करके उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को चित्रित किया है.

डा. सिंह ने निरंतर गतिशील रहकर जीवन भर जन हित के लिए संपूर्ण निष्ठा तथा समर्पण से कार्य किया. 27 जुलाई, 2005 को इंग्लैंड की ससेक्स काऊंटी में वे इस नश्वर संसार को त्याग कर स्वर्ग सिधार गये. डा. सिंह के परिवार में उनकी पत्नी चंद्रजोत सिंह, दो पुत्र व तीन पुत्रियां हैं. इनके कार्य से प्रभावित व ऋणी पशु-चिकित्साविदों ने उन्हें पशु-चिकित्सा व्यवसाय का अगुवा (Doyen) कहा जबकि अन्य ने उन्हें पशु-चिकित्सा विज्ञान का धर्मपिता, भीष्म पितामह, प्रेरणा-श्रोत, कर्मयोगी आदि सम्मानित नामों से पुकारा. उनके निकटतम सहयोगी भारतीय पशु-चिकित्सा परिषद के प्रथम सचिव प्रो. वी. राम कुमार के अनुसार 'डा. सी.एम. सिंह, व्यक्ति की अपेक्षा एक संस्थान के समान थे. उनके जैसे व्यक्ति इस संसार में शताब्दी में सिर्फ एक बार ही जन्म लेते हैं. वे एक स्वप्न-दर्शी तथा कर्म पुरुष थे तथा सदैव निराशाजनक परिस्थिति में भी आशावादी रहते थे. उन्होंने सदैव यह सिद्धांत अपने जीवन में अपनाया था. वे भारतीय पशु-चिकित्सा विज्ञान के धर्मनिता थे.' विश्व विख्यात भारतीय कृषि वैज्ञानिक डा. एम.एस. स्वामीनाथन के अनुसार 'मेरे महा निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कार्यकाल के दौरान मेरा सर्वाधिक अविस्मरणीय तथा अधिक सार्थक सम्बन्ध डा. सी.एम. सिंह तथा आईवीआरआई के साथ था. उनके पशु विज्ञान अनुसंधान व विकास के योगदान चिरस्मरणीय रहेंगे.' पशु जानपदिक रोग विज्ञान के जनक तथा 'वन मेडिसिन' सिद्धांत देने वाले कैलीर्फोनिया विश्व-विद्यालय, डेविस, यूएस के विश्व विख्यात वैज्ञानिक प्रो. कैलविन डब्लू. स्वाबे के अनुसार 'सी.एम. से चालीस वर्षों से भी अधिक समय से मेरी निकटतम व्यक्तिगत मित्रता थी, जोकि वास्तव में मेरी भारत की प्रथम कार्यकारी यात्रा से प्रारंभ हुई थी. अनेक वर्षों तक मुक्तेश्वर, इज्जतनगर और जिनेवा तथा संसार के अन्य स्थानों में हम प्रायः एक साथ होते थे. मैंने अपने संस्मरण में लिखा है कि- वे दस अति उत्कृष्ट मानवता-वादी लोगों में से एक हैं, जिनसे मिलने का मुझे सौभाग्य मिला है. वे अत्यधिक उत्साही व ईमानदार व्यक्ति थे.'

डा. सी.एम. सिंह इंडोवमेंट ट्रस्ट, बरेली की स्थापना सन् 1999 में डा. सिंह की प्रेरणा, प्रोत्साहन व प्रारंभिक आर्थिक सहयोग हुई थी. ट्रस्ट का आदर्श वाक्य 'नहिं ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' है. ट्रस्ट का ध्येय- पशु-चिकित्सा विज्ञान की चहुंमुखी प्रगति तथा पशु-चिकित्साविदों, कृषकों एवं पशुओं का कल्याण है. पिछले दो दशकों से अधिक वर्षों से ट्रस्ट इस ध्येय को पूर्ण करने के लिये वैज्ञानिक संगोष्ठियां, स्मृति व्याख्यान, तकनीकी व्याख्यान, कई वर्गों के पुरस्कार, स्नातक/स्नातकोत्तर छात्रों/संकाय हेतु विज्ञान लेख प्रतियोगिताएं आयोजित करता है. इस वर्ष डा. सिंह का जन्म शताब्दी वर्ष (1922-2022) है, जिसे ट्रस्ट देश भर में वेबिनार श्रृंखलाओं को आयोजित करके समारोह मना रहा है. पशु चिकित्सा क्षेत्र में डा. सिंह के कार्य सदैव स्मरण किए जाएंगे, क्योंकि उन्होंने भारत में पशु चिकित्सा विज्ञान को एक नवीन दिशा प्रदान की तथा राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के पशु चिकित्सा शोध व विकास कार्यों को एक अलग पहचान दिलाई व कृषकों एवं पशु पालकों को खुशहाल बनाने का प्रयास किया.